अट्ठाईस कि.मी. इंग्लिश चैनल

गोपाल प्रधान

जिस कैम्पस से विदा लेकर मैं शाहजहाँपुर गया था, वहाँ अब भी कोई लाइब्रेरी के इर्द-गिर्द गोल चक्कर में भटक कर घंटों घूम रहा होगा और बाहर निकलने का रास्ता पूछने पर बताने वाला कहता होगा कि आपको तो रास्ता खोजते हुए बस घंटे ही बीते हैं, मैं तो बरसों से उसी रास्ते को खोजने की कोशिश कर रहा हूँ। अब भी कोई सुलोचना का प्रेमी 'सुदूर, दूर द्वीपे' स्थित अपनी प्रेमिका को खोजने के लिए लाइब्रेरी की आठवीं मंज़िल पर पहुँचता होगा, और उसके नज़र न आने पर वहीं जान दे देता होगा। अब भी उसकी सड़ती हुई लाश को उठाने का पात्र समझे जाने पर कोई सफ़ाई कर्मचारी अंदर तक ग्लानि की सड़ांध से भर जाता होगा। अब भी कोई मेस में रोटी पर से अमेरिका द्वारा भेजे गए संक्रामक कीटाणुओं को हटाता हुआ पागल समझा जाता होगा और आधुनिकता की गुलामी से बचने के लिए पहाड़ियों से सुराही में भर कर पानी लाता होगा। अब भी कोई वॉर्डन के आने और अतिथियों के बारे में पूछने पर कहता होगा कि हम सब अतिथि हैं, क्या आपको लगता है कि आप यहाँ स्थायी रूप से रहने आए हैं। अब भी मेसों में उलझी हुई अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय परिघटनाओं को समझने के लिए दृष्टिकोण की स्पष्टता अर्जित करते विद्यार्थियों की टिमटिमाती हुई आँखें अतिथियों के प्रवाहपूर्ण भाषण सुनती होंगी।

इस कैम्पस से निकल पाना तक़रीबन एक असंभव काम है, जहाँ बीसों बरस पहले पढ़ाई ख़त्म कर चुके प्राणी किन्हीं लड़कों के कमरों में या बस स्टैंडों और ढाबों के इर्द-गिर्द भटकते हुए पाए जाते हैं। निकलने का कारण उतना सचेतन चुनाव नहीं था, जितना नौकरी करने की मजबूरी था। एम.फ़िल., पीएच.डी. के नाम पर सात बरस के चूहे की तरह संवेदनशील ज़िंदगी बिताने के बाद तीन दिन बरेली के *अमर उजाला* में नौकरी करके

वीरेन डंगवाल की डाँट खा कर अध्यापकी के लिए नियुक्ति पत्र लेकर इस ज़िले के ज़िला मुख्यालय पर पहुँचने के पहले ही इलाहाबाद में नक़्शे पर पैमाने के सहारे यह जान लिया था कि जहाँ नौकरी करनी है वह जगह ज़िला मुख्यालय से 28 किमी. दूर है।

यह दूरी एक टापू तक पहुँचने की जद्दोजहद से भरी हुई थी। पूरे चार बरस रोज़ यह दूरी मैंने जीप पर बैठकर पार की है। इसी क्रम में जीप पर बैठने की आरामदेह जगह तलाशने के तमाम गुर सीखे गए। बहरहाल, पहली बार उस द्वीप पर मैं जीप में नहीं गया। स्टेशन से बाहर निकलते ही शाहजहाँपुर से पुवायाँ की तरफ़ जाने वाली सड़क मिल जाती है। उसी पर खड़ा था कि एक मिनी ट्रक आया। सामान्यतः तो इसका इस्तेमाल सामान ढोने के लिए होता है, यह मानकर चुपचाप खड़ा था कि तमाम लोग उसकी ओर लपके। मैं आगे ड्राइवर की बग़ल में बैठने के लिए बढ़ा। कंधे पर एयर बैग और हाथ में ब्रीफ़केस देखकर ख़लासी ने भी कोई आपत्ति नहीं की। किराया चार रुपये, बड़ा ही आनंद रहेगा। ...एक घंटे में पुवायाँ उतरा।

तहसील और ज़िला

शाहजहाँपुर ज़िले की चार तहसीलों में पुवायाँ एक तहसील है। पूरी तहसील में कुल एक इंटर कॉलेज सन् 1996 में था। उसी से लगे हुए भवन में पहला डिग्री कॉलेज खुला था। यह कॉलेज चीनी मिल की ओर से खुला था, इसलिए इसका नाम था — गन्ना किसान डिग्री कॉलेज। संतोष यह मानकर पाया कि ब्राह्मण कॉलेज, क्षत्रिय कॉलेज, हिन्दू कॉलेज, सनातन धर्म कॉलेज के मुक़ाबले यह अच्छा ही नाम है। तहसील शाहजहाँपुर ज़िले में तो थी, लेकिन इसका लोकसभा क्षेत्र पीलीभीत था, जहाँ से सांसद मेनका गांधी थीं। फिर भी यहाँ की राजनीति पर जितेन्द्र प्रसाद का ख़ासा दबदबा था जो तब राज्यसभा के सदस्य थे। शाहजहाँपुर ज़िले के मुक़ाबले यहाँ कुछ भिन्नताएँ थीं, मसलन पीलीभीत की तरह ही यहाँ सिक्ख समुदाय के लोग काफ़ी थे।

इन्हीं विशेषताओं के कारण इस तहसील को यहाँ के लोग कुछ ज़्यादा ही विशेष मानते हैं। मसलन, आबादी ज़िले की एक चौथाई होने के बावजूद उसे 40 प्रतिशत बताते हुए अकसर लोग पाए जाते हैं। कुछ साल पहले पीलीभीत ज़िले के एक मंत्री विनोद तिवारी पुवायाँ आए थे। कोई माँग न होते हुए भी वे पुवायाँ को अलग ज़िला बनवाने के लिए संघर्ष करने का वादा कर गए। राजनीति के इस नए मुहावरे का इस ज़िले में बहुत प्रचलन है। मसलन, शाहजहाँपुर शहर के विधायक और प्रदेश सरकार में मंत्री सुरेश खन्ना एक ऐसी मीनार बनवाने पर तुले हैं जो क़ुतुबमीनार से भी ऊँची होगी। उन्होंने ही इस शहर में शहीद पार्क बनवाया है जिसमें उत्तर प्रदेश का दूसरा डांसिंग फाउंटेन लगा है (कानपुर में पहला है)। इसे ही विकास कहा जाता है। पानी न हो, बिजली न हो, पानी निकासी की व्यवस्था न होने से बरसात में शहर बजबजाने लगे, गलियों में सूअर घूमते हों — कोई बात नहीं। भारत की सबसे ऊँची मीनार तो है, डांसिंग फ़ाउंटेन तो है। किसान आत्महत्याएँ कर रहे हों — कोई बात नहीं, हम आपकी तहसील को अलग ज़िला बनवाएँगे।

राजनीति का यह नया मुहावरा राजनीतिज्ञों के आपराधिक रिकॉर्ड और उसके घिनौने चेहरों को छुपाने का मज़बूत हथियार है। मसलन, विकास के प्रतीक सुरेश खन्ना पर अयोध्या आन्दोलन के दौरान एक मुसलमान ट्रक ड्राइवर की हत्या का मुक़दमा ज़िला न्यायालय में चल रहा था। उसका एक चश्मदीद गवाह भी ज़िन्दा है। शहर में यह आम जानकारी है कि उन्होंने यह हत्या करवाई थी लेकिन 'अच्छे आदमी हैं, शहर का विकास कर रहे हैं' के नाम पर कोई इसकी चर्चा भी नहीं करता। मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने इस मुक़दमे को वापस भी ले लिया था। राजनीति की एक दूसरी नेत्री मेनका गांधी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने पर्यावरण प्रेम के लिए विख्यात हैं और उनकी इस छवि का उन्हें यहाँ चुनाव में 'प्रचुर लाभ मिलता है'। लेकिन सच्चाई यह है कि दलितों की हत्या कर देने वाले किसानों और भारी मात्रा में सरकारी ज़मीन फ़र्ज़ी नामों से दबाये बैठे भूमिचोरों की जमात ही उनका आधार है। पुवायाँ में उन्हीं क्रशर मालिकों से चन्दा लेकर चुनाव लड़ते उनकी आत्मा नहीं काँपती जो रात-दिन क़स्बे पर सीज़न भर राख उड़ाते रहते हैं। मिथक यह कि काम कराती हैं। धनी किसान लॉबी के लिए राजनीतिज्ञ का यही मतलब है कि नेता अफ़सरों के यहाँ उनका काम करा दे। एक सामंती अंदाज़ है पुवायाँ में। वे आईं और सभा को संबोधित करते हुए कहा कि दो दिन मैं यहाँ हूँ, जिन्हें कोई समस्या हो वे

आकर मिल सकते हैं। मिलने जाइए तो दलालों की भारी फ़ौज सांसद महोदया को घेरे हुए है। ख़ासियत बस एक कि सरकारी अधिकारियों को पीट देती हैं। सभी राजनेताओं की कार्यशैली में एक प्रतीकवाद और आपराधिक वस्तुनिष्ठता का मिश्रण है। मसलन, पूर्व सांसद जितेंद्र प्रसाद मूलतः ब्राह्मण अपराधियों को संरक्षण देने के लिए जाने जाते रहे हैं, तो राजनीति के नए उगते हुए सितारे सुरेश खन्ना अपराधियों की नई फ़सल पैदा कर रहे हैं। सपा नेता सत्यपाल सिंह यादव भी अपराधियों की एक जमात को संरक्षण देते रहे हैं। राजनीतिक नेता, अपराध, आर्थिक साम्राज्य, नौकरशाही पर पकड़ — ये सभी एक दूसरे के साथ घुले-मिले और एक-दूसरे को बल प्रदान करने वाले तत्व हैं।

ज़ेवरात और बंदूक़

यहाँ आते ही दो चीज़ें सबसे पहले अपका ध्यान आकर्षित करती हैं। क़स्बे की छोटी-सी आबादी के बावजूद ज़ेवरात की 70 दुकानें और ज़िला मुख्यालय पर तक़रीबन 500 दुकानें। आख़िर ये सब दुकानें करती क्या हैं? ऊपर से पूछिएगा तो पता चलेगा गिरवी गाँठ का काम होता है। बताते हैं कि चंबल तक का सोना यहाँ गलाया जाता है। वैसे तो बंदूक़ भी एक ज़ेवर की तरह यहाँ के घरों में विराजती है। आमदनी का एक बड़ा हिस्सा असलाह ख़रीदने में ख़र्च होता है। शस्त्र लाइसेंस दिलाना भी नेताओं की एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। अफ़सरों के मुँहलगे दलाल इसी के लिए तमाम लोगों को आगे-पीछे दौड़ाते रहते हैं। एक लाइसेंसी असले के पीछे कम से कम पाँच ग़ैर-लाइसेंसी असले मिलेंगे।

आर्थिक लूट के तीन स्रोत परंपरागत रूप से रहे हैंः ग्रीन मनी — अर्थात खेती, मुख्यतः गन्ना मिलों के इर्द-गिर्द बना माफ़िया तंत्र, व्हाइट मनी अर्थात ब्राउनशुगर की तस्करी से मिला पैसा और यलो मनी अर्थात सोने के व्यापार से पैदा होने वाला पैसा। इसी के साथ दो नए स्रोतों को जोड़ लीजिए — सांसदों-विधायकों को विकास कार्यों के लिए मिले धन का कमीशन और अपहरण उद्योग। सहकारिता आंदोलन पर पहले कॉड्रेस की पकड़ थी। भाजपा के प्रभुत्व के बढ़ने के साथ नए समीकरण उभरते हैं। चीनी मिलों में पहले जब पर्चियों के ज़रिए भुगतान होता था तो गन्ना माफ़िया ज़रूरत के वक़्त गन्ना किसानों को गन्ने का औना-पौना दाम लगाकर पैसे दे देता था और बदले में पर्चियाँ रख लेता था जिनका पूरा भुगतान चीनी मिल से होता था। अब चीनी मिलों को अधिकांश समय बंद रखने के लिए क्रशर मालिक डायरेक्टर्स और मिल प्रबंधन को घूस देते हैं, क्योंकि मिल के बंद रहने पर क्रशर में मनमाना दाम लगाकर गन्ना ख़रीदने में आसानी होती है। को-ऑपरेटिव बैंकों में गन्ना किसानों के भुगतान और खेती के लिए जारी क़र्ज़ पर बँधा-बँधाया कमीशन है, जिसका एक हिस्सा संचालकों, नेताओं और अधिकारियों को जाता है।

अपहरण उद्योग के बारे में मुझे एक परिचित के अपहरण और उनकी रिहाई से पता चला। हमारे कॉलेज से बी.ए. करके वह विद्यार्थी एम.ए. में ज़िला मुख्यालय के एक कॉलेज में आया था। बीच में गाँव जाने पर पुवायाँ दशहरा के मेले में गया। वह और उसका एक दोस्त मोटरसाइकिल पर थे। अचानक उनके पीछे से एक सुमो जैसी जीप आई और उसकी मोटरसाइकिल के आगे इस तरह खड़ी हुई कि उन्हें मोटरसाइकिल रोक देनी पड़ी। छह-सात लोगों ने दोनों को उठाकर जीप में लाद लिया और उनके हाथ पीछे बाँध दिए। उन्होंने उनकी आँखों पर पट्टी चढ़ाकर सीट के ऊपर लिटा दिया तथा उनके ऊपर बैठ गए। फिर उन्हें काफ़ी देर चलने के बाद एक जगह उतारा गया। वहाँ से पैदल घंटों चलकर वे पास के एक जंगल में पहुँचे। यह जगह शाहजहाँपुर-बदायूँ की सीमा पर जलालाबाद तहसील में रामगंगा की कहदी कहलाती है। वहाँ उन्हें ज़मीन पर डाल दिया गया और एक-एक रोटी खाने को दे दी गई। भोजन की यह अल्पमात्रा इसलिए दी जाती थी ताकि वे इतने कमज़ोर हो जाएँ कि भाग न सकें। फिर उनकी रिश्तेदारियों में फ़िरौती की रक़म के लिए चिट्ठियाँ भेजी गईं। अपहर्ताओं को इस बात का पता रहता था कि उनके ग़ायब होने की कोई रिपोर्ट लिखवाई गई है या नहीं। इस इलाक़े में दस-पंद्रह बरस से जो पुलिसवाले तैनात हैं, वे कहीं और तबादला हो जाने पर उसे रद्द कराने के लिए राजनीतिज्ञों के ज़रिए अधिकारियों पर दबाव डलवाते हैं।

गिरोह के लोग रोज़ आते और अपने अपहरणों के क़िस्से सुनाते। उसी क्रम में उन्होंने यह भी बताया कि यदि अपेक्षित रक़म उन्हें नहीं मिली तो वह इस 'पकड़' को बड़े गिरोह के हाथों बेच देंगे जो या तो बड़ी रक़म वसूलेगा या उसके शरीर के विभिन्न अंगों को निकलवाकर बेच देगा। इस उद्योग से जुड़े हुए गिरोह मिथकीय महिमा रखते हैं। और गिरोह के मुखियाओं का नाम बड़े अदब से लिया जाता है।

यहाँ कुछ गाँव ऐसे हैं जहाँ के लोग दिन में खेतों में काम करते हैं और शाम को डकैती के लिए निकल पड़ते हैं। पुराने क़िस्म के गिरोह घोड़ियों पर चला करते हैं। मेरे एक मित्र ने बताया कि वे शाम को एक गाँव के क़रीब पहुँचे तो वहाँ के एक बुज़ुर्ग ने सावधान करते हुए कहा कि 'घोड़िन को सजन को टाइम हुइ गयो है।' ये गिरोह पुलिस थानों को नियमित हिस्सा देते हैं जो थाने से 'ऊपर' तक पहुँचता है। फिर 'ऊपर' उसका बँटवारा राजनेताओं और अधिकारियों के बीच होता है।

अधिकारी की मौज

यहाँ अगर किसी अधिकारी की नियुक्ति हो गई तो वह किसी भी स्थिति में तबादला नहीं चाहता। और तो और पशु चिकित्सा अधिकारी भी मालामाल है क्योंकि पशुओं को काटने के लिए उनके बीमार होने का प्रमाण पत्र जारी करने के लिए उनकी फ़ीस नियत है। एक ज़िलाधिकारी महोदय बग़ल के ज़िले के रहने वाले थे। उन्होंने अपने गाँव में अपने माता और पिता के नाम से दो डिग्री कॉलेज खोले जिनके लिए ईंट, सरिया, सीमेंट और पैसा शाहजहाँपुर से जाता था। तमाम अधिकारियों यहाँ तक कि यातायात अधिकारी ने भी दो ट्रक गिट्टी और कुछ पैसा उनको दिया था। पुवायाँ तहसील में चार साल रुकने वाले एक उप-ज़िलाधिकारी ने तक़रीबन पाँच करोड़ रुपये बनाए। उसके यहाँ कोई अधिकारी आए एक अच्छी दुधारू गाय पहुँच जाएगी। उसका चारा भी कोई पहुँचा जाएगा और दूध भी दुहकर उसके घर पहुँच जाएगा। सिर्फ़ छह महीने के लिए उप-ज़िलाधिकारी रहे एक सज्जन ने मारूति ख़रीद ली।

मंडी में जिन व्यापारियों की दुकानें हैं, उनमें से एक व्यापारी अपने तराज़ू के पल्ले के नीचे किलो का बटखरा चिपकाए हुए था। वह अधिकारियों का सबसे चहेता व्यापारी है। ये व्यापारी पूरे साल किसानों को खेती के लिए क़र्ज़ देते हैं। बदले में किसान उन्हीं के यहाँ ग़ल्ला बेचता है। अनाज की क़ीमत में से क़र्ज़ और सूद काट लिए जाते हैं। उस व्यापारी ने अफ़सरों को मौज कराने के लिए क़स्बे में स्वीमिंग पूल बनवा रखा था। इसके अलावा पंजाब से आए लोगों में से भी बड़े किसान, पेट्रोल पम्प मालिक, ट्रैक्टर ट्रॉली के विक्रेता इत्यादि ऐसे लोग हैं जिनके घर अफ़सरों की आरामगाह हैं। अफ़सर को ये सब सुविधाएँ पासपोर्ट बनवाने, हथियारों के लाइसेंस दिलाने, किसी मामले में फँस जाने पर राहत दिलाने और मुख्यतः अवैध काग़ज़ात को क़ानूनी सुरक्षा प्रदान करने के लिए मुहैया कराई जाती हैं।

जंगलात की ज़मीन के अलावा अन्य कई तरह की ज़मीनें हैं जिन पर अवैध क़ब्ज़ा बना हुआ है। मसलन, एक गौसदन है जिसके नाम चार सौ एकड़ ज़मीन है लेकिन इस पर अवैध क़ब्ज़ा है और इसके लिए अकसर हत्याएँ भी होती रहती हैं।

तीज-त्यौहार

पूरे क़स्बे का माहौल उत्सवी है। हरेक दिन कोई न कोई धार्मिक विधि-विधान होता रहता है। रक्षाबन्धन के चार-पाँच दिन आगे-पीछे बसों में भयानक भीड़ होती है। तक़रीबन एक ज़िम्मेदारी की तरह बहनें अपने भाइयों को राखी बाँधने आती हैं।

होली का तो हाल पूछिए मत। क़स्बे में पहली होली के चार दिन बाद पहुँचा तो सब कुछ सूना। सब्ज़ी भी नहीं मिलती। सभी होटल बंद। एक महीना पहले से ही सामने वाले दर्ज़ी महोदय की दुकान रात-रात भर खुली रहती थी। बताते हैं कुछ दुकानदारों की साल भर की आमदनी होली की कमाई ही होती है। ज़िला मुख्यालय यानी शाहजहाँपुर आने पर एक अजीब रस्म का पता चला। शाहजहाँपुर साम्प्रदायिक रूप से 'संवेदनशील' जगह है। आबादी में हिन्दू-मुसलमानों का अनुपात लगभग आधा-आधा है। पहले भी दंगे हुए हैं। होली के दिन ख़ासकर तनाव

बढ़ जाता है। कारण यह कि उस दिन शहर में चार जगहों से नवाब के जुलूस निकलते हैं। एक दिन पहले किसी मुसलमान को कुछ रुपयों के एवज़ में नवाब बनने के लिए राज़ी किया जाता है। फिर रात भर उसे शराब पिलाई जाती है। सुबह शराब के नशे में धुत कर उसे नंगा किया जाता है फिर एक भैंसागाड़ी पर उसे बिठाकर जुलूस निकाला जाता है। रास्ते भर उसे लोग जूतों से पीटते रहते हैं। मकानों के ऊपर से बाल्टी भर-भर कर रंग फेंका जाता है। जिधर-जिधर से जुलूस निकलता जाता है वहाँ-वहाँ रंग बंद होता जाता है। कभी प्रशासन ने इस पर रोक लगाई थी। फिर अदालत से सांस्कृतिक परंपरा के नाम पर स्टे मिल गया है। अब प्रशासन की देख-रेख में यह जुलूस निकलता है। डीएम, एसपी, एसडीएम और तमाम छोटे-मोटे अधिकारियों की निगरानी में मुख्य जुलूस हर साल मुस्लिम बहुल इलाक़े तक पहुँचता है और फिर पत्थरबाजी। नारे भी खुलेआम मुस्लिम विरोधी लगते रहते हैं। एक साल बाद अभी गया तो मोबाइल फ़ोन जगह-जगह बज रहे थे। लेकिन बाक़ी सब जस का तस।

गंगा स्नान एक स्थानीय पर्व है। ट्रैक्टरों में भर-भर कर लोग कार्तिक पूर्णिमा के दिन गंगा नहाने जाते हैं। पिछले साल रेलवे के ऊपर बने फ़्लाई ओवर से एक ट्रैक्टर ट्रॉली पलटकर सीधे नीचे सड़क पर आकर गिरी तो चार मौतें हो गईं।

दर्ज़ियों की बात चली तो याद आया। पूरे शाहजहाँपुर में दर्ज़ी समुदाय की आबादी बहुत ज़्यादा है। प्रसिद्ध अभिनेता (रामगोपाल वर्मा की फ़िल्मों वाले) राजपाल यादव इसी ज़िले के हैं। उन्होंने भी कभी दर्ज़ी बनने का प्रशिक्षण लिया था। दरअसल यहाँ एक प्रतिरक्षा वस्त्र कारख़ाना है। हरेक साल कुछेक युवक उसमें अप्रेन्टिसशिप करते हैं, जिन्हें बाद में जगह होने पर दर्ज़ी की नौकरी मिल जाती है। रिटायर होने के बाद या नौकरी न मिलने की सूरत में ये लोग दुकान खोल लेते हैं। अब्दुल हमीद रहने वाले गाज़ीपुर के थे। पाकिस्तान के साथ सन् 71 की जंग में वे मारे गए थे। दर्जा 8 में शहीदों की जीवनियों के एक संग्रह में मैंने उनकी जीवनी पढ़ी थी। तब सैनिक बनने का सपना भी देखा था। उनके नाम पर शाहजहाँपुर में पुल देखा तो थोड़ा आश्चर्य हुआ। पता चला कि वे भी दर्ज़ी समुदाय के थे इसलिए उनके नाम पर इक्कीसी समुदाय सालाना जलसा भी करता है।

इस कारख़ाने में कभी समाजवादियों और वामपंथियों की यूनियन का दबदबा था। अब उसके नाम से रामलीला ही महत्वपूर्ण रह गई है। लेकिन इसे भी कोई छोटी-मोटी चीज़ न समझें। खुद राजपाल भी इसी की पैदाइश हैं। जगदीशचंद्र माथुर, भुवनेश्वर से अब तक यह परंपरा सुरक्षित है। शाहजहाँपुर जा कर ही समझ में आया कि *मुझे चाँद चाहिए* की नायिका का घर शाहजहाँपुर में होना कोई आश्चर्य नहीं है। नाटक नवयुवकों-युवतियों के लिए मुक्ति का एक रास्ता है। 'गांधी भवन' नामक रंगशाला की मिसाल लखनऊ के अलावा उत्तर प्रदेश में और कहीं नहीं मिलेगी। हरेक साल के नाट्य समारोहों में तक़रीबन सभी महत्वपूर्ण टीमें भाग लेती हैं। इसके अतिरिक्त 'स्पिक मैके' की इकाई होने की वजह से शास्त्रीय संगीत भी लोगों को सुनने को मिल जाता है।

ऑर्डिनेन्स क्लोनिंग फ़ैक्टरी के अलावा चीनी मिलें ही महत्वपूर्ण उद्योग हैं। हालाँकि ज़्यादातर चीनी मिलें सहकारिता क्षेत्र में हैं लेकिन सहकारिता के किसी भाव को जन्म देने के बजाय वे अधिकारियों की जेबें भरने का माध्यम हैं और घाटे में चल रही हैं।

शिक्षा

ज़िला मुख्यालय में एक पुराना अल्पसंख्यक महाविद्यालय गांधी फ़ैजे आम कॉलेज है। इसके अलावा कुछ सनातनी धर्मगुरुओं द्वारा खोला गया स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज भी है जिसके अध्यक्ष पूर्व गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानंद हैं। लड़कियों का एक डिग्री कॉलेज आर्यसमाजियों ने खोला है। तमाम कॉलेजों की प्रबंध समिति में झगड़ा-फ़साद चलता रहता है। अब से पहले किसी कॉलेज में छात्र संघ नहीं था और विद्यार्थियों के साथ प्राइमरी स्कूल जैसे अनुशासन के पक्षधर आम तौर पर अध्यापक हैं। ईसाई लोगों द्वारा स्थापित नेवटेक्निकल इंस्टीट्यूट है जिसके अध्यक्ष आशीष मैसी भाजपा के सक्रिय सदस्य हैं।

कॉलेजों के बाहर कुछ बेहतरीन पढ़ने-लिखने वाले लोग हैं जिनमें एक हृदयेश हिन्दी कहानी में महत्वपूर्ण शख़्सियत हैं। 75 साल के ऊपर के होने के बावजूद सक्रिय हैं। सोने के पुराने व्यापारी श्याम किशोर सेठ हिन्दी

की एक महत्वपूर्ण पत्रिका का संपादन किया करते थे। स्थानीय स्तर पर ज़िलाधिकारी के निजी सहायक चंद्रमोहन भी पढ़ते-लिखते रहते हैं। यही वह मंडली थी जिसके सहारे छह साल का जीवन चल सका।

बाहर की आँख शायद ज़्यादा ही विशेषताओं पर ज़ोर देती है। मसलन, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरे मित्र पहले दोपहर में सोने की आदत पर मुझे गाली दिया करते थे। यहीं आकर मैंने देखा कि पुवायाँ या शाहजहाँपुर में मुझे दोपहर में सोता कोई नहीं दिखाई पड़ा। 'दुकान मेरा मंदिर' का अर्थ भी यहीं समझा। हर कोई अपनी दुकान पर पूरी तरह फ़िट-फ़ाट होकर दिखाई पड़ता है। पूर्वी इलाक़ों में संयुक्त परिवार एक ऐसा आदर्श है जिसके न होने पर अफ़सोस आप हर किसी के मुँह से सुनिएगा। लेकिन इस इलाक़े में विवाह के बाद लड़के को पारिवारिक संपत्ति में उसका हिस्सा देकर अलग कर देना बुरा नहीं समझा जाता।

एक हद तक व्यापारिक संस्कृति के हावी होने के कारण मेरे ट्यूशन न पढ़ाने पर लोगों को अचरज होता था। हर कोई शादियों में जाने के लिए सूट सिलवाकर रखता है। बच्चे के 16 साल का होते-होते उसे धंधे में डालने की हड़बड़ी रहती है। शायद हरेक शहर ऐसा ही होता हो लेकिन यहाँ के लोग पूरब यानी बनारस के लोगों को काहिल और दरिद्र समझते हैं। यहीं आकर मैंने ईमानदार और बेईमान की नई परिभाषा सुनी और समझी। ईमानदार वह अधिकारी या कर्मचारी है जो घूस लेकर काम कर दे। जो पैसा लेकर भी काम न करे बेईमान तो उसे ही कहा जाएगा। इसे शाहजहाँपुर में जुगाड़ कहते हैं। इसे हँसी में लोग टेकनीक भी कहते हैं।

तो जुगाड़/टेकनीक के काम करने का तरीक़ा कुछ इस तरह था। बैलगाड़ी में बैल की जगह डीज़ल इंजन लगाकर उसे चलाते हुए गाड़ी पर कुछ सामान लेकर लोग खेत तक जाते। फिर इंजन को कुएँ में लगाकर खेत में पानी पटाते और फिर उसी तरह वापस आ जाते। इसे वहाँ 'मारूता' कहते हैं। 'मारूति' का मर्दाना संस्करण। इसी से थोड़ी दूरी तक सवारियाँ भी किराए पर ढोई जातीं। कहते हैं देवेगौड़ा के ज़माने में इस टेकनीक के बारे में अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने सुना तो भारतीय प्रधानमंत्री से इसके निर्यात की गुज़ारिश की। देवेगौड़ा जी ने कहा कि उसी टेकनीक से तो मेरी सरकार चल रही है निर्यात कैसे करूँ? इस टेकनीक से सारे काम हो जाते हैं। ऐसा भरोसा यहाँ के लोगों को था। कॉलेज में ऐडमिशन हो चुके हैं। रास्ते में एक सज्जन नमस्कार कर ऐडमिशन के लिए पूछते हैं। बताता हूँ — 'अब कोई संभावना नहीं है।' 'कोई जुगाड़ नहीं हो जाएगा?' प्रश्न है।

आबादी में ब्राह्मण समुदाय की बहुतायत है लेकिन पेशे के लिहाज़ से पिछड़ापन नहीं है क्योंकि हरेक पेशे में ब्राह्मण समुदाय के लोग हैं। खेती में धनी, हथियार से लैस और जातीय अहंकार, ऊपर से खान-पान की शुद्धता का अतिरिक्त आग्रह। सभी प्रकार के अपराधों में भी लिप्त। कॉलेज में एक सज्जन एक छात्र की सिफ़ारिश के लिए आए। मैंने परिचय पूछा तो बोले मुझे नहीं जानते? मैं धारा 376 का मुजरिम हूँ। मैं तो सन्नाटे में आ गया। बाक़ी समुदायों में ब्राह्मण विरोध इसीलिए बहुत ज़्यादा है। यह समुदाय एक क़बीले की तरह रहता है। कोई आदमी उतना ही ताक़तवर हैं जितने ताक़तवर उसके रिश्तेदार हैं। ताक़त का मतलब बन्दूक़ें। जिसके पास बन्दूक़ का लाइसेंस है उसके पास शादियों में जाने के लिए सर्वाधिक निमंत्रण आते हैं। फिर तो फ़ायरिंग का कम्पीटिशन होता है। कहते हैं कई लोग इसमें मारे भी जाते हैं।

पुवायाँ और शाहजहाँपुर के व्यापारियों ने बताया कि शुरू-शुरू में कुछेक गाँवों के लोग दुकानों पर से ज़बरदस्ती सामान उठा ले जाते थे। फिर व्यापारियों ने दुकानों पर बतौर नौकर उन्हीं गाँवों के दबंग लोगों के बच्चों को रखना शुरू किया। इसे 'कुत्ता रखना' भी कहा जाता है।

सूदखोरी यहाँ मुख्य धन्धा है। सूद पर रुपया चलानेवालों को पेशेवर लोग रुपया देते हैं 2.5 प्रतिशत छमाही के चक्रवृद्धि ब्याज पर। वे इसे बाक़ी क़र्ज़ माँगनेवालों को 4 प्रतिशत छमाही चक्रवद्धि ब्याज पर देते हैं बदले में गिरवी के बतौर कोई आभूषण रखा जाता है। इसे ही 'गिरवी गाँठ' कहते हैं। खेतों में फ़सलों के साथ उगने वाले खरपतवार को गुल्ली-डंडा कहा जाता है। 'खरपतवार नाशक' की बजाय 'गुल्ली-डंडा से छुट्टी'। उलटने को 'लौटना' बोलते हैं। 'दूध लौट दिया'। शाहजहाँपुर शहर के बीच एक सड़क खड़ी माँग की तरह आर-पार गुज़रती है। इसे नागार्जुन जी 'सदा सुहागिन सड़क' कहते थे।

पत्रकारिता आम तौर पर क़स्बाई है। विज्ञापन लेने के लिए अफ़सरों के यहाँ पत्रकारों को घूमते-फिरते देखा

जा सकता है। एक पत्रकार अपने पेशे के बल पर दो-दो अवैध जीपें चलवाते थे। एक पत्रकार के यहाँ क्रशर मालिक खांडसारी पहुँचाते थे। हमारे प्रिंसिपल कहते — लोकतंत्र के चौथे खम्भे की क़ीमत दो बोरा चीनी है। इसी में युवकों की भारी फ़ौज कॉलेजों से किसी तरह डिग्री हासिल करने के लिए कुंजियों और ट्यूशन के सहारे परीक्षा में उतरती है। असफल लोग नाटक में अपनी क़िस्मत आज़माते या फिर छोटा-मोटा धंधा कर लेते हैं। किसी दिन स्थिरता हासिल होगी इसी आशा से आपाधापी में लगे रहते और बूढ़े हो जाते हैं।

शाहजहाँपुर के मेरे मित्र कुलदीप भागी के ज़िक्र के बग़ैर तो बात अधूरी ही रह जाएगी। शहर के आलीशान सिनेमा हॉल, *निशात टॉकीज़* के मालिक श्री भागी फ़िल्म और टेलीविज़न संस्थान, पूना में पढ़े थे तथा शाहजहाँपुर में लगातार अपने स्तर के लोगों को बातचीत के लिए ढूँढते रहते थे। बासु भट्टाचार्य की फ़िल्म *तुम्हारा कल्लू* में उन्होंने अभिनय भी किया था। इस वजह से उनका एक नाम कल्लू भी था। शाम को दारू पी लेते और चटनी से लेकर सिगार तक हर विषय पर बातचीत करने में सक्षम हो जाते। मेरे शुभाकांक्षी होने के नाते हमेशा मुझे शाहजहाँपुर छोड़ने की सलाह देते रहते। इसीलिए अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से अस्थायी नियुक्ति का पत्र मिलते ही मैंने उनकी इच्छा का सम्मान किया और उत्तर आधुनिक समय में कूद पड़ा। वह कहानी फिर कभी।